प्रत्यक्ष दर्शन

एक बार मीरी पीरी के शहनशाह श्री गुरुगोबिन्द साहिब जी का डेरा आगरे में यमुना के किनारे पूरी शानो-शौकत से लगा हुआ था । इस डेरे में रब्बी कीर्तन होता और सिख संगत दर्शनों के लिए आती। एक दिन एक माली सारे दिन मेहनत करके शहर से बाहर जा रहा था तो उसने सुना कि पातशाहों के पातशाह इस शहर में आए हुए हैं जो लोक परलोक के सहायक हैं और सबकी मनोकामनाओं को पूरा करते हैं। उनका नूरी जलाल, वीरता और कौतुक देखकर मुगल सम्राट तक विस्मित रह जाते थे।

माली भी ईश्वर भक्त था, अतः वह यमुना के किनारे जिस तरफ शहनशाह का डेरा लगा हुआ था, चल पड़ा । रास्ते में उसे एक प्रभु भक्त मिला जो यह शब्द उच्चारण करता हुआ आ रहा था - 'हरदम नानकशाह धर्म दा बेडा बन्ने ला।' 'साँई जी ! यह हरदम नानकशाह का मतलब क्या है?' उस माली ने पूछा । उस भक्त ने उत्तर दिया, 'मतलब तो मुझे भी नहीं पता, यह सच्चे पातशाह की बख्शीश है।' 'सच्चे पातशाह की बख्शीश? यह सच्चा पातशाह कौन है?' माली ने बड़ी नम्रता से पूछा। 'वो सच्चा पातशाह ही तो नानकशाह है जो दीनदुखियों का सहायक है, जो भी सच्चे दिल से उस पातशाह के चरण पकड़ते हैं उसकी सभी मनोकामनाएँ पूरी हो जाती है । भले आदमी! तू भी जा, शायद तेरा भी कुछ बन जाए । चल मैं तुझे ले चलता हूँ।'

माली 'शहनशाह' के दर्शनों की अभिलाषा लेकर सुथरे शाह जी के पीछे-पीछे चल पड़ा। शहनशाह अचानक अपने तम्बू से निकलकर बाहर खड़े हो गए थे। सुथरे शाह जी आगे बढ़े और 'हरदम नानकशाह धरम दा बेड़ा बन्ने ला' के शब्द उच्चारते हुये हजूरी में पहुँच गये और माली को कहने लगे, लो अब प्रत्यक्ष दर्शन कर लो । फिर न कहना कि पातशाह के

दर्शन नहीं किए। माली आगे बढ़ा उसे अपने आप की होश न रही । वह नूरी जलवा देखकर हैरान रह गया । पातशाह के चरणों में सिर रख दिया। निहाल ! भाई निहाल ! पातशाह के मुख से निकला और बोले 'उठो गुरुमुख जी और करतार का सिमरन करो ।' पर वह माली चरणों में ऐसा पड़ा हुआ था मानों अपनी सुध-बुध ही खो बैठा हो ।

सुथरे शाह जी बोले - अरशी प्रीतम के चरणों में गिरकर समय नहीं खोना चाहिए। जितनी देर चरणों में सिर पड़ा रहेगा, तुम्हें नूरी मुखड़े का दर्शन नहीं हो सकेगा। उठो, अपने प्रीतम के खुले दर्शन करके अपना जन्म सफल कर लो । माली दोनों हाथ जोड़कर बड़े प्यार से खड़ा हो गया। सतगुरु ने कहा, 'भाई साहब । जो कुछ भी दिल की मुराद है सब पूरी होगी। जो लालसा है वह कह दो।' माली ने कहा, 'मेरे शहनशाह ! अगर प्रसन्न हो तो जन्म मरण के बन्धन काट दो।' सुथरे शाह जी बोले - तेरे बन्धन तो उस वक्त ही कट गए थे जब तेरे हृदय के अन्दर मेरे पातशाहों के पातशाह के दर्शन का विचार आया था ।

शहनशाह मुस्कुराए और बोले, 'सुथरे !' यह निरंकारी दात है। इसमें कोई शक नहीं कि 'जो माँगे ठाकुर अपने तै सोई सोई देवे।' वो दातार सिरजनहार अपने प्रेमियों की मुँह माँगी मुरादें पूरी करता है। इसलिए जो भी उसे सच्चे दिल से प्यार करता है उसकी सारी मुरादें पूरी हो जाती हैं। दातार, इस बात का मुझे पहले ही पता था लेकिन बक्शनहार जी, जिसने एक बार दर्शन कर लिए उसके हृदय अन्दर निरंकारी ज्योत बस गई, फिर कोई लालसा वहाँ रह ही कैसे सकती है ? वो निरंकार करतार साक्षात् मीरी पीरी के मालिक गुरु नानक की छठी ज्योत का प्रकाश करके संसार का अंधेरा दूर कर रहा हो तो किसी को इधर-उधर भटकने की क्या जरूरत है। गुरु नानक कलयुग में धर्म के बेड़े को पार करने आए हैं। हर युग का अपना-अपना अवतार हुआ है। सतयुग का अवतार श्री विष्णु थे। द्वापर का

अवतार श्री कृष्ण थे। त्रेता युग का अवतार श्री रामचन्द्र थे और कलियुगी जीवों के उद्धार के लिए श्री गुरु नानक जी ने अवतार लिया। अब गुरु नानक का राज है, गुरु नानक का पहरा है और गुरु नानक ही पार उतारने के लिए नाव है। महाराज जिसने गुरु नानक के छठे स्वरूप का दर्शन कर लिया उसे फिर किसी बात की भूख नहीं रह जाती ।

यम-कंकर उसके पास नहीं फटक सकते, वो तो इसी जन्म में मुक्त हुआ समझो- सुथरे ने कहा। सुथरे शाह जी ने फिर उस माली से कहा - अभी भी कोई भ्रम बाकी है तो कहो । जल्दी कर, चरणों पर गिर पड़, और चरणों का स्पर्श मस्तक द्वारा प्राप्त करके अमर हो जा, पर याद रखना फिर इन चरणों से दूर मत जाना, बल्कि इन चरण कमलों में ही समा जाना।

माली आश्चर्यचकित होकर सबकुछ सुनता रहा जो कुछ सुथरे शाह जी ने कहा। कुछ देर बाद वह अपनी भेंट शहनशाह के चरणों में रखकर विनती करने लगा, मेरे पातशाहों के पातशाह! इस नाचीज़ की यह भेंट स्वीकार करें। यह आप ही की बख्शीश है। अब मुझे इसकी भी जरुरत नहीं रही।

'दातार जी तुझ बिन होर जे मंगना, सिर दुखा दे दुख।
दे नाम संतोखिया उतरै मन की भुख।'

भले आदमी तू अब भी नाम की लालसा रखकर बैठा है। नाम तो इसलिए मांगते है कि नामीं (परमात्मा) की प्राप्ति हो जाए, उसकी याद हर स हृदय में बसी रहे ।

अब तू नामी की हजूरी में खड़ा होकर प्रत्यक्ष दर्शन कर रहा है, अब भी नाम की जरुरत बाकी रह गई है? सुथरे शाह जी ने कहा । सतगुरु जी मुस्कुराए और कहने लगे, 'सुथरे' यह दलीलें गुरु सिख को शोभा नहीं

देती। शब्द का प्यार, नाम का सिमरन, गुरु मंत्र चित्त में बसाना ही असली प्रेम है। इसके बिना वह चंचल मन रह ही नहीं सकता। मन भटकता रहता है लेकिन सिमरन ही एक ऐसा साधन है जो मन को एक जगह बाँधे रखता है ।

मेरे शहनशाह! यह साधन दूसरे लोगों के लिए चाहे लाभदायक हो, मेरे लिए यह किसी काम का नहीं है। एक बार निरंकारी ज्योत के दर्शन हो जाएं तो यह दर्शनों का नशा कई जन्मों तक नहीं उतरता। जब यह नाम खुमारी चढ़ी ही रहनी है तो फिर सिमरन की क्या जरूरत है। सुथरे शाह जी ने फिर विनम्रता के साथ विनती की । मेरे पातशाह! इस जनम में तो नानक निरंकारी के नाम का नशा तो उतरना नहीं इसकी खुमारी तो शायद दूसरे जन्म में भी न उतरे। यह खुमारी वो है जो उतारे भी नहीं उतरती। दिन में तो आपके प्रत्यक्ष दर्शन होते रहते हैं रात में सपने में अपने पातशाह की हजूरी में होता हूँ। यह दर्शन दीदार का नशा तो चढ़ा ही रहता है, इस खुमारी में सिमरन का ख्याल किस तरह आ सकता है? इतना कहकर सुथरे शाह जी मीरी पीरी के मालिक के चरणों में गिर पड़े। पातशाह ने कहा, 'निहाल ! भाई निहाल! उठो।'

सुथरे शाह जी अब चरण नहीं छोड़ते। अन्त में बोले, 'शहनशाह जी, यह चरण कमलों की मौज ले रहा हूँ, आप क्यों रोकते हैं?' सुथरे शाह जी को यह बात सुनकर पातशाह हँस पड़े और बोले, भाई, तू तो चरण कमलों की मौज ले रहा है लेकिन बाकी संगत का ख्याल भी है या नहीं?'सच्चे पातशाह!' मैंनें कई बार देखा है कि जब बहुत सारी संगत हजूर के दरबार में आती है तो संगतों की लाईन लग जाती है। कई ऐसे प्रेमी आते हैं जो कि कितनी देर माथा ही टेकते रहते हैं बाकि बेचारे बड़े परेशान हो जाते हैं। यह माथा टेक कर रास्ता क्यों नहीं छोड़ते? आज तो मैं अकेला ही हूँ फिर भी आप मुझे मौज नहीं लेने देते?

'सुथरे' यह ठीक है।, वो सारे गुरु दरबार में दर्शन के लिए आते हैं और माथा टेकते हुए भूल जाते हैं कि किसी दूसरे ने भी नमस्कार करना है। वो तेरे जैसे कितनी देर सिर झुकाए रखते हैं लेकिन चरण शरण आने का यह मतलब नहीं। चरण शरण आने का मतलब यह है कि शिष्य चाहे कहीं भी बैठा रहे सतगुरु का ख्याल हृदय में हर समय रहे। खाली माथा टेकने से कुछ नहीं होता। सच्चे शिष्य के हृदय में ऐसा प्रेम होता है कि वो उठते-बैठते, सोते-जागते, खाते-पीते एक पल के लिए भी अपने सतगुरु को नहीं भूलता।

इसलिए तो कोई बुरा विचार शिष्य के मन में आ ही नहीं सकता। शिष्य का हृदय हर समय गुरु के चरणों में झुका रहता है, उसे इस तरह सिर झुका के झुके रहने की जरूरत नहीं होती। मेरे पातशाह, यही तो नाम खुमारी है। मेरा दिल करता है कि दूर से ही नूरानी दर्शन होते रहें। जब मैं माथा टेकता हूँ तो सिर झुक जाता है तब यह नूरानी मुखड़ा नज़र नहीं आता। मेरा दिल तो नहीं करता कि मैं माथा टेकूँ पर डर लगता है कि हजूर यह न कहें कि गुस्ताख हो गया है। सुथरे ने हँसते-हँसते कहा।

'भाई सिखा! तेरियाँ तू ही जाने। जो मरजी है कर, पर यह दलीलें किसी और को न सुनाईं। सारे इस अवस्था में नहीं होते।' सतगुरु ने कहा। वह माली अपने रंग में खड़ा सच्चे पातशाह के नूरी मुखड़े के प्रत्यक्ष दर्शन कर रहा था। साथ में यह वार्तालाप भी सुन रहा था, हैरान था कि पातशाह के दरबार में इतने बड़े-बड़े लाडले व निडर सेवक भी हुए हैं जो इस तरह शहनशाह के साथ वार्तालाप करते हैं।

वो माली शहनशाह के चरणों में गिर पड़ा। चरण स्पर्श कर, विनती करने लगा। 'दातार! मेहर करो, मेहर करो, इस जीव को भी इसी तरह चरणों में लगाए रखो और इस भवसागर से पार उतार दो।' 'अरे, और पार उतारा